

डॉ.:

काशी
१५.१.६९.

VII/297
पुनः

डॉ. मुकुंदा लाल,

आपका पत्र मिला।

पंथ को रक्षित करने के लिए तो उसी में लिखा है। जिसकी
 अतिरिक्त तब - इस अवसर को नहीं खोना चाहिए -
 सर्वोपरि है। इसकी प्रत्यक्ष विचारणीय है। आप
 अपने अनुमानों में जिसकी दोड़ धूप की आवश्यकता
 पड़ती है उसकी आप - इस अवसर पर, जो
 इसे स्वीकार करें - यह हमें भी या नहीं बहुत संदिग्ध
 है। दूसरा प्रश्न भी यह पड़ता है कि कोरान
 है आर्थिक। उसे विशेष जानकारी तो नहीं है। किन्तु
 सुना है कि अत्यधिक लाभ पड़ता है - इन सुनावों में
 कोई सफलता तो शारीरिक तथा आर्थिक दोनों
 ही इच्छित आप इसे न पड़े तो अच्छा है।
 यह तो विचारणीय है। मैं तो आप
 को है। आपका निर्णय निश्चय ही मेरे निर्णय
 की अपेक्षा, अधिक उचित और परिष्कारित होगा।
 शुभ वात कोर : इस सभा में
 भाग ले रहे हैं। आशा है आप इसे

आम के न समझेंगे।

आमी न,
बिबिध सुधारों के

17 पोस्ट कार्ड
POST CARD
1967



पं० पद्मकान्त मालवीय

अभ्युदय प्रेस

प्रयाग